कृषि नवाचार
हिन्दी पत्रिका
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

कम लागत में पत्तागोभी की खेती

सुभाष वर्मा, रजनीश कुमार, सचिन शर्मा, मंजुल जैन, भुवनेश शर्मा

सहायक प्राध्यापक, कृषि विद्यालय, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)

E-mail: subhashverma0052@gmail.com

परिचय

पत्तागोभी (ब्रैसिका ओलेरासिया क़िस्म कैपिटाटा) एक प्रमुख शीतकालीन सब्जी है जो पत्तेदार और गोलाकार आकार में उगाई जाती है। इसे विशेष रूप से उसके पोषण मूल्य और बाजार में मांग के कारण उगाया जाता है। भारत में पत्तागोभी की खेती पूरे देश में होती है, विशेष कर ठंडे और शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्रों में। पत्तागोभी की खेती कृषि वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग करके की जाती है, जिससे इसकी पैदावार और गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। इस निबंध में हम पत्तागोभी की प्रारंभिक खेती की विधियों, तकनीकों, और उससे जुड़े सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा करेंगे।

पत्तागोभी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु और मिट्टी

पत्तागोभी की सफल खेती के लिए शीतोष्ण और ठंडी जलवायु आवश्यक होती है। इसका बीजारोपण 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान में किया जाता है। बढ़ते पौधों के लिए ठंडा मौसम आदर्श होता है, लेकिन अत्यधिक ठंड या पाला फसलों को नुकसान पहुँचा सकता है। पत्तागोभी का पौधा 10-25 डिग्री सेल्सियस के बीच अच्छे से बढ़ता है और पकते समय इसे ठंडे मौसम की आवश्यकता होती है।

मिट्टी की बात करें तो गोभी की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है। मिट्टी का पीएच स्तर 6 से 7.5 के बीच होना चाहिए। ज्यादा अम्लीय या क्षारीय मिट्टी पत्तागोभी के विकास को प्रभावित करती है। उपयुक्त जल निकास वाली मिट्टी पौधों को जड़ों के माध्यम से सही पोषण प्राप्त करने में मदद करती है।

पत्तागोभी की किस्में

पत्तागोभी की खेती के लिए कई किस्में उपलब्ध हैं, जो जलवायु और मिट्टी के आधार पर चुनी जाती हैं। कुछ प्रमुख किस्में इस प्रकार हैं:

1. **गोल्डन एकर**: यह किस्म जल्दी पकने वाली है और ठंडे क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।
2. **पूसा मुकुट**: यह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित एक उच्च उत्पादन वाली किस्म है।
3. **एग्रो बाजार**: यह मध्यम समय में पकने वाली किस्म है, जो बाजार में अच्छी मांग रखती है।
4. **रेड कैबेज**: यह लाल रंग की पत्तियों वाली किस्म है, जो विशेष रूप से सलाद के लिए उगाई जाती है।

किस्म का चयन उस क्षेत्र की जलवायु और बाजार की मांग को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

बीजा रोपण और नर्सरी तैयारी

पत्तागोभी की खेती के लिए नर्सरी तैयार करना महत्वपूर्ण कदम है। नर्सरी में पौधों को 25-30 दिनों तक तैयार किया जाता है, जिसके बाद उन्हें मुख्य खेत में प्रतिरोपित किया जाता है। बीजा रोपण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाती है:

1. नर्सरी की जमीन को अच्छी तरह से तैयार करें और इसमें खाद मिलाएं।
2. बीजों को 1-2 सेमी गहराई में बोएं और हल्की सिंचाई करें।
3. नर्सरी को प्लास्टिक की चादर से ढक दें, जिससे बीज गर्म और नम बने रहें।
4. बीज 4-5 दिनों में अंकुरित हो जाते हैं और 25-30 दिनों में पौधे प्रतिरोपण के लिए तैयार हो जाते हैं।

मुख्य खेत की तैयारी और प्रतिरोपण

मुख्य खेत की तैयारी के लिए 2-3 बार जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बनाया जाता है। खेत में गोबर की खादया अन्य जैविक खाद मिलाना आवश्यक है, जिससे मिट्टी में पोषण की मात्रा बढ़ती है। इसके बाद खेत को समतल कर लेते हैं, और 45 से 60 सेमी की दूरी पर कतारें तैयार करते हैं।

जब नर्सरी के पौधे 4-5 पत्तियाँ विकसित कर लेते हैं, तब उन्हें मुख्य खेत में प्रतिरोपित किया जाता है। पौधों के बीच की दूरी 30 सेमी और कतारों के बीच की दूरी 45 सेमी रखनी चाहिए।

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 01 भाग 06 सितम्बर, 2024

प्रतिरोपण के बाद हल्की सिंचाई करें, जिससे पौधे अच्छी तरह से जड़ पकड़ सकें।

सिंचाई और जल प्रबंधन

पत्तागोभी की खेती में नियमित सिंचाई की आवश्यकता होती है, लेकिन जल भराव से बचना जरूरी है। प्रारंभिक दौर में पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है, लेकिन इसके बाद सिंचाई अंतराल बढ़ाया जा सकता है। सर्दियों में 8-10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करें। ध्यान रहे कि पत्तों पर पानी न गिरें, क्योंकि इससे रोग फैल सकते हैं।

खाद और पोषण प्रबंधन

पत्तागोभी की अच्छी उपज के लिए पोषक तत्वों का सही अनुपात में उपयोग करना आवश्यक है। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश तीन प्रमुख पोषक तत्व हैं, जो गोभी की अच्छी बढ़वार के लिए जरूरी होते हैं। खेत की तैयारी के समय 15-20 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर मिलाएं। इसके अलावा, 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस, और 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर दिया जाता है। नाइट्रोजन को 2-3 बार में देना चाहिए, जिसमें पहली बार प्रतिरोपण के समय और फिर 20-30 दिनों के अंतराल पर दिया जाता है।

रोग और कीट प्रबंधन

पत्तागोभी की फसल में कई तरह के रोग और कीट लग सकते हैं। प्रमुख रोगों में तना गलन, पत्तों का पीला होना और डाउनी मिल्ड्यू शामिल हैं। इन रोगों को नियंत्रित करने के लिए जैविक और रासायनिक दोनों उपायों का सहारा लिया जा सकता है।

कीटों में गोभी का सफेद पतंगा और अफ़िड मुख्य रूप से पौधों को नुकसान पहुँचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

1. रोग-प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।
2. समय-समय पर पौधों का निरीक्षण करें।
3. कीटनाशकों का संतुलित उपयोग करें।
4. जैविक कीटनाशकों जैसेनीम के तेल का छिड़काव करें।

कटाई और भंडारण

पत्तागोभी की कटाई तब की जाती है, जब इसकी पत्तियाँ पूर्ण विकसित हो जाती हैं और सख्त हो जाती हैं। कटाई के लिए सुबह या शाम का समय उपयुक्त होता है, क्योंकि इस समय तापमान कम रहता है, और गोभी ताजा बनी रहती है। कटाई के बादगोभी को बाजार में जल्द से जल्द पहुँचाना चाहिए, क्योंकि ज्यादा समय तक रखने से उसकी गुणवत्ता प्रभावित होती है।

भंडारण के लिए ठंडे स्थानों का चयन करें। आधुनिक कोल्ड स्टोरेज तकनीकों का उपयोग कर के गोभी को लंबे समय तक संरक्षित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

पत्तागोभी की खेती से किसान अच्छा लाभ कमा सकते हैं, बशर्ते कि वे सही तकनीक और प्रबंधन का पालन करें। जलवायु, मिट्टी, बीज, खाद, सिंचाई और रोग-कीट प्रबंधन पर ध्यान देकर किसान अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं। गोभी की खेती न केवल किसानों के आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण पोषण तत्व भी प्रदान करती है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है।